IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

मध्यकालीन भारतीय परम्परा में हरम का योगदान

Rajni Kumari
Research Scholar,
University Department of History
Lalit Narayan Mithila University, Darbhnaga

Abstract: शासकीय और आर्थिक हैसियत के मुताबिक हरम की स्त्रियों के लिए अलग से संरक्षित बाग–बगीचा –जलाशय, फव्वारा आदि होता था और मनोरंजन के भरपूर साधन जुटाए जाते थे । हरम की स्त्रियाँ विशेष अवसरो पर हरम से बाहर निकल सकती थीं, लेकिन इसके लिए परिवार के मुखिया को पूर्वानुमति एवं पूर्ण पर्दादारी अनिवार्य थी। जाहिर है कि मध्यमकालीन भारत मैं शासक तथा धनी वर्ग की महिलओं को सोने के पिंजड़े में कैद कर दिया गया था, जिसे हरम कहा
जाता है ।

Index Terms **- शासकीय, हरम, मध्यकालीन, स्त्री।**

मध्यकालीन भारत के शासक , कुलीन तथा समृद्शाली प्रत्येक परिवार के मुखिया निश्चित रूप से एक हरम–– रणिवास या जनानखाना होता था, जिसमें परिवार की स्त्री सदस्या और उनकी परिचारिकाएँ रहती थीं । यह मुख्य प्रासाद का एक हिस्सा अथवा उसके सन्किट सहज पहुँच पर अवस्थित पृथक भवन होता था, जिसके पर्दा और सुरक्षा का पुख्ता इंतजाम होता था । इनमें परिवार के पुरूष सदस्य के अलावे किसी पराये २ का प्रवेश पूर्णतः वर्जित था । इतना तक कि हरम की बीमार स्त्रियों के इलाज में भी वैद्य या हकीम से पूर्ण पर्दादारी बरती जाती थी। हरम की सेवा एवं सुरक्षा सम्बन्धी सारे कार्यों का सम्पादन महिला कर्मचारियों द्वारा किया जाता था और हरम के बाहरी कार्यों के लिए हिजड़े रखे जाते थे। हरम की स्त्रियों के लिए सुख सुविधा के सारे इन्ताजाम किए जाते थे । शासकीय और आर्थिक हैसियत के मतबिक हरम की स्त्रियों के लिए अलग से संरक्षित बाग–बगीचा –जलाशय, फव्वारा आदि होता था और मनोरंजन के भरपूर साधन जुटाए जाते थे । हरम की स्त्रियाँ विशेष अवसरो पर हरम से बाहर निकल सकती थीं, लेकिन इसके लिए परिवार के मुखिया को पूर्वानुमति एवं पूर्ण पर्दादारी अनिवार्य थी। जाहिर है कि मध्यमकालीन भारत मैं शासक तथा धनी वर्ग की महिलओं को सोने के पिंजड़े में कैद कर दिया गया था, जिसे हरम कहा जाता है।

दिल्ली सुल्तान और मुगल बादशाहों की हा अर्थात अतरूपर उनके जीवन का कर था, जहाँ उनकी पलीयाँ उपरलीयाँ, येलो, माता, पनियों, गर्ग सावधियों की स्त्रियाँ आदि रहा करती थी जिनकी सेवा में दिसियों, परिचारिकाएँ तथा महिला कर्मचारी रहती थीं । हरम में कितनी पत्नियाँ, नेला तथा सेविकाएं हो यह मुल्तान या बादशाह के ऐश्वर्य एवं विलासप्रियता, कामपिपासा, श्साधनों की उपलब्धता तथा कलेक अन्य बातों पर निर्भर करता था । देश की विशिष्ट सुन्दर स्त्रियों से अपने हरम की शोभा बढ़ाना दिल्ली के शासक अपना शान समझते थे और उन्हें हासिल करने के जासूस और दलाल तो रखे ही जाते थे, छल, बल, तथा कभी–कभी युद्ध का सहारा भी लिया जाता था । यदि ठराधिकारी पुत्र न हो तो राजसत्ता पर अधिकार करने वाला दिवंगत सुल्तान की पत्नियों तथा रखैलों पर स्वामित्व हासिल कर लेता था । कभी–कभी हरम को विधवाएं भी नए अधिशासक से शादी रचा लेती थीं । हरम विलासिता एवं व्यभिचार

का केन्द्र था और उस पर कोई नियंत्रण या मर्यादा नहीं थी, शिवा सुल्तान या बादशाह की व्यसिंगक्त इच्छा के । दरअसल हरम की प्रथा में अनैतिकता, विलासति, व्यभिचार और स्त्रियों की दासता को संस्थागत रूप प्रदान किया । सुल्तानों और बादशाहों का अनुकरण अभिजात कुलीन सरदारों, जागीरदारों , सूबेदारों, जमीन्दारों और सत्ता तथा धन से जुड़े अन्य लोगों ने किया ।

इसका यह तात्पर्य नहीं कि हरम मात्र व्यभिचार, अनैतिकता तथा स्त्री दासता का संस्थागत रूप था । हरम में ही परिवार के बच्चों का पालन–पोषण , शिक्षा–दीक्षा तथा देख–रेख होती थी । हरम श्भावी शासक वर्ग की प्रशिक्षण शाला था । राज परिवार का अभिन्न हिस्सा होने के नाते हरम का राज्य दरवार पर भी अच्छा खासा प्रभाव होता था । हरम की दबंग एवं प्रभावशाली महिलाओं राजनीति में दखल रखती थी। इस सम्बन्ध में इल्तुतमिश की प्रमुख बेगम शाह तुर्कान , फिरोजशाह खिल्ली की प्रमुख रानी मलिका –ए–जहाँ, यासद्दीन तुगलक की पत्नी मखद्म–ए–जहाँ, अकबर की धाय माँ माहम अंगा, नूरजहा आदि के नाम लिए जा सकते हैं । हरम ने ही रजिया सुल्तान जैसी सुयोग्य शासिका दिया तो गलबदन बेगम, मेहरून्निसा तथा जेबुन्निसा जैसी विदुर्षा महिलाएँ भी पैदा की । यह हरम का वातावरण जिसने सुल्तान मुइजुद्दीन कैकुबाद की कामुकता, विलासिता तथा नाशाखारा जा ! रित्रिक दुर्बलताओं को समाप्त कर दिया तो शहजादा दाराशिकोह का बौद्धिक परिष्कार, किया ।

हरम नृत्य, संगीत, चित्रकारी, कसिदाकारी एवं अन्य कई ललित कलाओं के केन्द्र होते पथे। शहजादों एवं शाहजादियों की उत्कृष्ट शिक्षा केन्द्र के रूप में भी इरम को परिगणित किया जाता था हरम में कई देशों तथा संस्कृतियों की महिलाएँ एक साथ रहती थी जिनसे । सांस्कृतिक संश्लेषण की प्रक्रिया तेज हुई । अकबर का हरम इस मामले में आदर्श माना जा द्य सकता है । जाहिर है कि मध्यकालीन भारतीय संस्कृति में हरम को महत्वपूर्ण स्थान हासिल था । फिर भी मध्यकालीन हरम में निम्न कोटि की चरित्रहीन युवतियों, गायिकाओं , । नृत्यांगनाओं, साकियों, दासियों का भारी जमघट होता था, जिनकी संख्या कभी–कभी हजारों में होती थी। इस प्रकार हरम उत्कृष्ट सांस्कृतिक गतिविधियों के साथ–साथ सुल्तानों । राजाओं, नबाबों तथा बादशाहातें छत्र–छाया में दुराचार, षडयंत्र तथा कामुक विलासति के । केन्द्र भी थे, जिनका अध्ययन शोध–का एक उपयुक्त विषय हो सकता हैं। प्रस्तावित शोध कार्य मध्यकालीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति में हरम की दोहरी भूमिका के निरूपण के साथ–साथ नारीवादी दष्टि से हरम की प्रथा के ऐतिहासिक विश्लेषण का एक प्रयास है। **पूर्व अध्ययनों की समीक्षा :**

मध्य कालीन भारतीय इतिहासकारो– इतिवृत्तकारो तथा साहित्यकारों ने हरम के सम्बन्ध में काफी कुछ लिखा है । हसन निजामी, मिन–राज–उस– सिराज जियाउद्दीन बर्नी, अली याजदी, अमीर खुसरो, जहाँगीर, अबुल फजल, गुलबदन बेगम, अब्दुल हमीद लाहौरी बदाउनी आदि ने अपनी रचनाओं में हरम पर यथेष्ट प्रकाश डाला है । किन्तु मध्यकालीन इतिहासग्रन्थ एवं साहित्य बहमल्य स्त्रोत सामग्री के लिए ही उपयोगी हैं । वे हरम के ऐतिहासिक अध्ययन नहीं हैं और उनमें हरम सम्बन्धी विवरण रिपोताज की तर्ज पर रू हैं। मध्यकालीन भारत के आधुनिक इतिहासकारों ने हरम के इतिहास का विवेचनता जलर किया है, किन्तु अध्ययन सिर्फ हरम पर केन्द्रित न रहने तथा विस्तृत अध्ययन क्षेत्र होने के ! कारण मध्यकालीन भारतीय हरम सम्बन्धी अध्ययन अत्यन्त ही समिति पैमाने पर ही किया गया है। ऐसी पुस्तकों में युसूफ हुसैन की ग्लिम्प्सेज ऑफ मेडिएवल इंडियन क्लचर, के0 प एम0 अशरफ की लाइफ एंड कंडीशन ऑफ पिपुल ऑफ हिन्दुस्तान अजीज अहमदकी ! स्टडीज इन इस्लामिक काल्चर इन इंडियन इनवरायमेन्ट, आदि पुस्तकों का उल्लेख किया जा सकता है । जाहिर है कि हरम पर केन्द्रित अध्ययन प्रायः नगण्य ही हुआ है । प्रस्तुत अध्ययन हरम के इतिहास का सम्पूर्ण अध्यन होगा ।

उद्देश्य, महत्व एवं प्रासंगिकता

प्रस्तावित शोध परियोजना का उद्देश्य–मध्यकालीन भारत में हरम के इतिहास का समग्र अध्ययन करना है । हरम की तड़क–भड़क और विलासी जीवन आधुनिक काल में भले ही परिवर्तित हुआ हो लेकिन हरम की प्राथ ऑपनिवेशिक काल में भी जारी रही । इसके अवशेष आज भी पुराने नबाबी तथा बड़ी जमीनदार परिवारों में देखे जा सकते है । हाल के वर्षों में मुस्लिम कट्टरवादी एवं आतंकबादी संकीर्णताओं के कारण हरम की प्रथा को अध्यात्मिक का मिला है । कठोर पर्दा तथा बहुविाह का चलन नारी स्वतंत्रता एवं सशक्तिकरण के सामने एक बड़ी चुनौती के रूप में खड़ा है । ऐसी परिस्थिति में

मध्यकालीन हरम के ऐतिहासिक अनुशीलन का प्रासंगिक महत्व है । हरम के अध्ययन से वर्तमान नारी आन्दोलन में इतिहास बोध पैदा होने की संभावना है ।

अध्ययन के क्षेत्र में योगदान

चूंकि शेध विषय पर केन्द्रित अध्ययन अब तक बहुत अधिक नहीं हुआ है, अतः प्रस्तावित शेध काय द्वारा तथ्यों, आंकड़ों, विवेचन तथा विश्लेषण के स्तर पर कतिपय नवीन बातों की जानकारी हासिल होने की संभावना है , जिससे निश्चित रूप से ज्ञान के क्षेत्र का विस्तार होगा । चूँकि अब तक हरमों के क्षेत्र में या तो माहिमांडन किया गया है अथवा कटु निन्दा की गई है और अधिकांश अध्ययन विवरणात्मक ही हैं. , अतः प्रस्तावित विश्लेषणात्मक गवेषणा से ज्ञान के क्षितिज के विस्तार होने की प्रबल संभावना प्रस्तावित परियोजना में विद्यमान है ।

अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तावित शोध विषय सामजिक इतिहास अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत आता है किन्तु हरम का अपने अपने समकालीन राजनीतिक तथा सांस्कृतिक तो जीवन से गहरा सरोकार होता था और फिर हरम की स्थिति तत्कालीन आर्थिक स्थिति पर निर्भर द्य करती थी। अतः प्रस्तुत शोधे क्षेत्र अन्तर्गत के मध्यकालीन भारत का सम्पूर्ण इतिहास । शामिल होगा । पुनः भारत में हरम की प्रथा का आगमन पश्चिमी एशिया से हुआ था, इसलिए द्य जरूरी होगा कि बतौर पृष्ठभूमि पश्चिमी एशिया में हरम की परम्परा एक नजर डाली जाय।

अध्ययन पद्धति

प्रस्तावित अध्ययन को ऐतिहासिक आलोचनात्मक पद्धति के कठोर अनुशासन का अवलम्बन कर पूरा किया जायगा । चूंकि अधिकांश स्त्रोतों के प्राधिकार राजकीय संरक्षण में रहने वाले इतिवृत्तकार ही है। इसलिए यह आवश्यक होगा कि साक्ष्यों को वाय–ह एवं आन्तरिक आलोचना के जरिये गहरी पड़ताल के बाद पाठ्यों की ऐतिहासिकता तथा इतिहास के पाट यीकरण की मालेचालाक विधायी जाय। साथ ही जिससे पाठ्यों के साहित्यिक एवं यथार्य अर्थ पदलेषण एवं तथ्यों के निरूपण में सहुलियत होगी ।

शोध परिकल्पाना

प्रस्तुत अध्ययन इस परिकल्पना पर आधारित है कि मध्यकालीन भारतीय हरम एक अनैतिक संस्था थी जिसे भारतीय संस्कृति का एक कलंक ही माना जा सकता है, तथापि हरमों को जीवन सांस्कृतिक संश्लेषण एवं कलात्मक गतिविधियों के जीवन्त केन्द्र भी थे ।

संदर्भ सूची :–

- Mugal harem of Medival India - by K.S. Lai (1925-15821,21-25173-03
- Role of Eulauchs and drugs like opiurn in the Mugal Haab? 5.12
- Mugal Harem- by K.S. Lal (1988)
- Love in Mungal Harem - By K.S .lal (1929) a A visit to Mugal harem-livs of Royal vioren-South Asia-07 12: 02
- Mugal harem (with lattica) water colour painting, 1
- Princ with five concubinc, by karuna Sharma, |
- Love scenes from Mugal Harern respresented through painting : 2232 I Sharma. i
- Private life of the Mugal of India (1526-1203 AD)- K. Sharma i
- Harem Scene - by K. Sharma. !
- Lot of five Patch work shari harern Trousers. |
- Mugal India (Studies in polity, ideas, society of culture) i
- Mugal Harem - 126 wine and women's K, Sharma. !

- The Mugal harem - Mirza Mohammed Russia. |
- Prince in His Harem- K.S Lal. i
- History of Humayunama-by Gulbadan Begurn. !
- Lady at her toilet (The perception & Prictice of Besty) Hutchinson 11
- brary. Series. i
- Lady with hukka- Penguin book ampery.
- The story of Half vad and worm - by G. DAS.Eternal Lovers- Series - I shah Jahan & Mumtaz Mahal, The soft Hues of Love-by Dee wan German Das.